IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

भारत के आर्थिक विकास में जनजातियों की भूमिका (सीधी जिले के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Madhulika Shrivastava[1] and Preeti Satyanami[2]
Professor, Department of Sociology[1]
Research Scholar, Department of Sociology[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश:- जनजाति समाज आज भी आधुनिक चमक दमक से अपने आप को बचाए हुए हैं। इसके विपरीत शहरों में रहने वाला समाज समय-समय पर भारतीय परम्पराओ में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन करता रहता है। जनजाति समाज आज भी भारतीय संस्कृति का वाहक माना जाता है, क्योकि यह समाज सनातन हिन्दू संस्कृति का पूरे अनुशासन के साथ पालन करता पाया जाता है। जनजाति उस सामाजिक समुदाय को कहा जाता है,जो राज्य के विकास के पहले अस्तित्व में था, लेकिन वह राज्य के बाहर निवास करता था। भारत के संविधान में "अनुसूचित जनजाति" शब्द का प्रयोग हुआ है, इसलिएइनके लिए विशेष प्रावधान लागू किये गए हैं । जनजाति भारत के आदिवासियो के लिए इस्तेमाल होने वाला एक वैधानिक शब्द है ।

मुख्य शब्द – जनजाति, आर्थिक विकास, परिवर्तन, भूमिका।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. डेविस किंग्सले (1973) मानव समाज किताब महल इलाहाबाद।
2. बघेल डी. एस. (1990) भारतीय सामाजिक समस्याऐं, पुष्पराज प्रकशन रीवा।
3. तिवारी शिव कुमार (1998) म.प्र. के आदिवासी म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. ग्रीन ए. डब्ल्यू. सोसियोलॉजी।
5. उव्रेती एज.सी. (1970) भारतीय जनजातियां ओरिएंटल प्रकाशन।
6. एल्विन बी (1939) द बैगा जॉनमुर्रे लन्दन।
7. पटेल जी. पी. (1991) बैगा जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन।